उपसंहार
उपसंहार

श्रीमती मृणाल पाण्डेस समकालीन हिंदी साहित्य की एक ऐसी महिला रचनाकार हैं जिन्होंने अपनी रचनात्मक उपस्थिति दर्ज करके हिंदी साहित्य का संबद्धन किया है। वे बहुमुखी प्रतिभा संपन्न कलाकार हैं जिन्होंने गद्य की सभी विधाओं में समान रूप से अपनी कलम सफलतापूर्वक चलाई है। उनकी रचनाओं के केंद्र में सख्तियों को रखा गया है। वे मीडिया पर्याय हैं और स्पष्टतः उनकी रचनाओं की बड़ी खासियत है। उनकी रचनाओं को समाज का आईना कहा जा सकता है। समाज में व्यापक भ्रष्टाचार और अन्याय-अत्याचार की खुली और उनकी रचनाओं की उल्लेखनीय विशेषता है। विषय की व्यापकता उनकी रचनाओं में पायी जाती है। अपने समय और समाज की सदी अभिव्यक्ति के कारण उनकी रचनाएँ मामिलक बन पड़ी हैं। समाज में ख्री-पुरुष के बदलते संबंधों और पारिवारिक विघटन को उन्होंने अपनी रचनाओं में मामिलकता के साथ उभारते कोशिश की है। मृणाल पाण्डेय ने अपनी रचनाओं में सख्तियों को धीरज बनाने का सराहनीय कार्य किया है। अपनी रचनाओं में उन्होंने न केवल अपने परिवेश की सच्चाइयों को उजागर किया है, बल्कि पाठक को उन समस्याओं के प्रति सजग रहने का आह्वान किया है। मृणालजी ने हिंदी साहित्य को जो योगदान दिया है, वह अंतर्गत महत्वपूर्ण ही है। समय के साथ सरोकार रखनेवाली उपयुक्त रचनाएँ उनकी पहचान के चिह्न हैं।
नाटककार के रूप में मृणालजी की सप्ताहान समकालीन हिंदी साहित्य में है, खास तौर पर महिला नाटककार के रूप में। 'जो राम रचि राखा', 'आदमी जो मझुआरा नहीं था,' 'काजर की कोठरी', 'चोर निकल के भागा', 'शर्माजी की मुक्ति कथा', 'धीरे-धीरे रे मना' और 'सुपरमेन की वापसी' आदि उनके नाटक हैं।

बाज़ारीकरण का प्रभाव, पाठ्यालय संस्कृति का प्रभाव, समाज के हर क्षेत्र में होने वाला भ्रष्टाचार आदि को उन्होंने अपने नाटकों में बहुत ही प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया है। हमारे समकालीन सामाजिक, राजनैतिक, अर्थिक और सांस्कृतिक जीवन के सभी पहलुओं पर मृणालजी ने प्रकाश डाला है। इसलिए मृणालजी के नाटक बहुत प्रासंगिक भी हैं। मृणालजी स्वयं पत्तकार होने के नाते पत्तकारिता के क्षेत्र में होने वाले भ्रष्टाचार को भी पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

मृणाल पाण्डे की कहानी, उपन्यास और आलोचना में उनकी दृष्टि खी विश्वासवादी हैं, किंतु उनके नाटक, इसका अपवाद है। इन रचनाओं में उन्होंने खी को 'परिधि' से 'केन्द्र' में ला खड़ा किया है तो उन्होंने अपने नाटकों में समाज को, उसकी समस्याओं को, उसमें व्यास विसंगतियों—विविधम्बनाओं को प्रस्तुत किया है।

उनके नाटक में आज के भ्रष्टाचार, अमानवीयता, राजसत्ता की मक्कारी तथा ईमानदार आदमी की असहायता और विवशाता का चित्र अंकित हुआ है। उनके नाटक में उनसे बड़ी विशेषता यह है कि उनमें खी-पुरुष संबंधों के सीमित दायरे के बदले व्यापक सामाजिक सन्दर्भ प्रस्तुत हुए हैं। मंचीयता के साथ-साथ शिल्प की दृष्टि से भी उनके नाटक काबिले तारीफ ही हैं।
‘विरुद्ध’, ‘पटरंगपुर पुराण’, और ‘रास्तों पर भटकते हुए’
आदि उनके उपन्यास हैं। मृणालजी ने ऐतिहासिक परिवेश को साथ
लेकर अपने उपन्यासों में वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक
और सांस्कृतिक परिवेश का अंकन किया है। उपन्यासों की कथावृत्त
अत्यंत गहरा चित्रण कर देते वाली है। संख्या के रूप में उपन्यास
कम होते हुए भी विषय की गहनता उसे अन्य महिला उपन्यासकारों
से अलग रखती है। अपने उपन्यासों में केन्द्र पात्र के रूप में नारी है
तो भी तत्कालीन समाज में झटक सभी घटनाओं का विद्युष्यण इन
उपन्यासों में दर्शानीय है। संक्षेप में कहा जाय तो मृणालजी ने अपने
उपन्यासों के द्वारा पाठकों को सभी रूप में आज के समाज में सजग
रहने का आदेश दिया है। वर्तमान समाज का भी जीता-जागता
चित्र उन्होंने बखूबी से उकरा है। इसलिए उपन्यासकार के रूप में
मृणालजी का स्थान भी उल्लेखनीय है।

‘दरम्यान’, ‘शब्दवादी’, ‘एक नीच टैंजेडी’, ‘एक खी का
विदांत’, ‘यानी की एक बात थी’, ‘बचुली चॉकितिन न कधी’
और ‘चार दिन की जिवानी तरी’ आदि मृणाल पाण्डे के कहानी
संकलन हैं। उनकी कहानी कला अत्यंत साहित्यिक है। उन्होंने अपनी
कहानियों के जरिये समकालीन सामाजिक यथार्थ्य का सलासा
पाठकों के सामने किया है। उनकी अधिकांश कहानियों के केन्द्र में
नारी ही रही है। फिर भी समकालीन समाज में होने वाली सभी
विसंगतियों पर भी लेखिका ने अपनी कलम चलाई है। लेखिका ने
हमारे सामने कई मुद्दों को पेश करके उस बात पर सोच-विचार
करने का या सजह एवं जाग्रत रहने का आह्वान दिया है। उनकी
इन कहानियों के आधार पर बताया जा सकता है कि पारिवारिक जीवन के विभिन्न पक्ष, ख़ैर-पुरुष संबंध, परिवार के सदस्यों के आपसी रिश्ते और उसके बदलते रूप, बाल-मनोविज्ञान, ख़ैर के प्रति समाज का दृष्टिकोण, ख़ैर को दोयम दर्जा का नागरिक मानने की प्रवृत्ति, पुरुषवर्धनवाद का विरोध, नौकरी पेशा नारी की यातनाएँ, मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों का खोलापन, पारिस्थितिक सजगता, बुद्धजीवन का ग्रेहार्थ जैसे विभिन्न पक्षों को उजागर करने में मृणालजी की कहानियाँ सफल हुई हैं।

मृणालजी निबन्ध लेखन में अपनी खास पहचान देकर हिंदी साहित्य जगत में अवतीर्ण हुई हैं। ‘ख़ैर देह की राजनीति से देश की राजनीति तक’, ‘परिधि पर ख़ैर’, ‘ओ उब्बीरी’, ‘जहाँ औरतें गढ़ी जाती हैं’ और ‘ख़ैर:लंबा सफर’ आदि समीक्षात्मक निबन्ध हैं। इनमें संकलित निबन्धों के ज़रिए वर्तमान समाज की विसंगतियों को खासकर महिलाओं की दयनीय स्थिति का अंकन लेखिका ने किया है। मृणालजी सामाजिक अन्वेषण के विरुद्ध निरंतर लेखनी चालाने वाली लेखिका हैं। वर्तमान दौर में भी ख़ैरियों की स्थिति में ज्यादा बदलाव नहीं आया है। पितृसत्तात्मक समाज द्वारा कल्पित नियमों में जकड़ी हुई ख़ैर आज भी अपने अस्तित्व के लिए भरोसी है। ख़ैर की सामाजिक स्थिति अन्य हाथियेकृत वर्गों से नीचे है। लेखिका हमेशा नारी को जागृत करके मुख्य धारा में अपनी अमिट द्राप बनाने का निर्देश देती है। समाज में ऐतिहासिक सभ्यता बनाने का इर्दगिर्द देती है। समाज में पल-पल परिवर्तन संभव होता ही रहता है। उसी प्रकार ख़ैरियों को भी अपने ऊपर किए। जाने वाले अमानवीय अत्याचार को चुपचाप सहन करने के बदले खुला प्रतिरोध व्यक्त करना चाहिए। हमारे महान भारतीय संस्कृति में भी
ख्रियों को ऊंचा स्थान दिया गया है। ख्री की पूजनीय व्यक्ति मानने वाले समाज ही उसका श्रोपण करता है। ख्री को इस प्रकार के छद्म मुखौटे से बाहर आकर, आम मानव की तरह अपना हक हासिल करना चाहिए। लेखिका के अनुसार सागर के नीचे बैठकर लहरें गिनना ही नहीं, उस सागर की गहराई को जानने के लिए उस में कूद पड़ना चाहिए। ख्रियों को नीति मिलने के लिए उसे खुद लडना पड़ेगा। देश की आधी आबादी के चुप रहने से देश की उत्सृष्टि नहीं होगी। आधी आबादी को भी अपनी आवाज़ बुलंद करनी चाहिए। पुरुषवचर्वखानी फ़िल्मियों का पता लगाने को थोड़कर उसे समानता के लिए आगे बढ़ना है। समाजिक उत्सृष्टि के लिए ख्री-पुरुष की समानता आवश्यक है। मृणालजी अपने लेखों के जरिए देश की उत्सृष्टि के लिए ख्री और पुरुष को अपने अस्तित्व के साथ आगे बढ़ने का आह्वान भी करती है। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि मृणालजी के सारे लेख सामाजिक सरोकारों से जुड़े हुए हैं और ख्री पक्षधरता उन लेखों की आत्मा है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि मृणाल पाण्डेय जी ने अपने नाटकों में राजनीति और समाज के यथार्थ का व्यापक परिप्रेक्ष्य लिया है तो उपन्यासों , कहानियों आलोचना तथा अन्य रचनाओं में ख्री सशक्तिकरण और ख्री अस्मिता पर जोर दिया है।लेकिन इन सब में उनकी मानतावादी दृष्टि ही मुखर है|यह मानवतावादी दृष्टि ही उनकी रचनाओं को विशेष बनाती है |अतः यह कहना समीचीन है कि मृणाल पाण्डेय का साहित्य सृजन अत्यंत महत्वपूर्ण है और प्रासंगिक भी |
परिशिष्ट